मानव प्रकृति का विज्ञान: त्रिगुण रहस्य

विकास, पतन और संतुलन की मनोवैज्ञानिक यात्रा

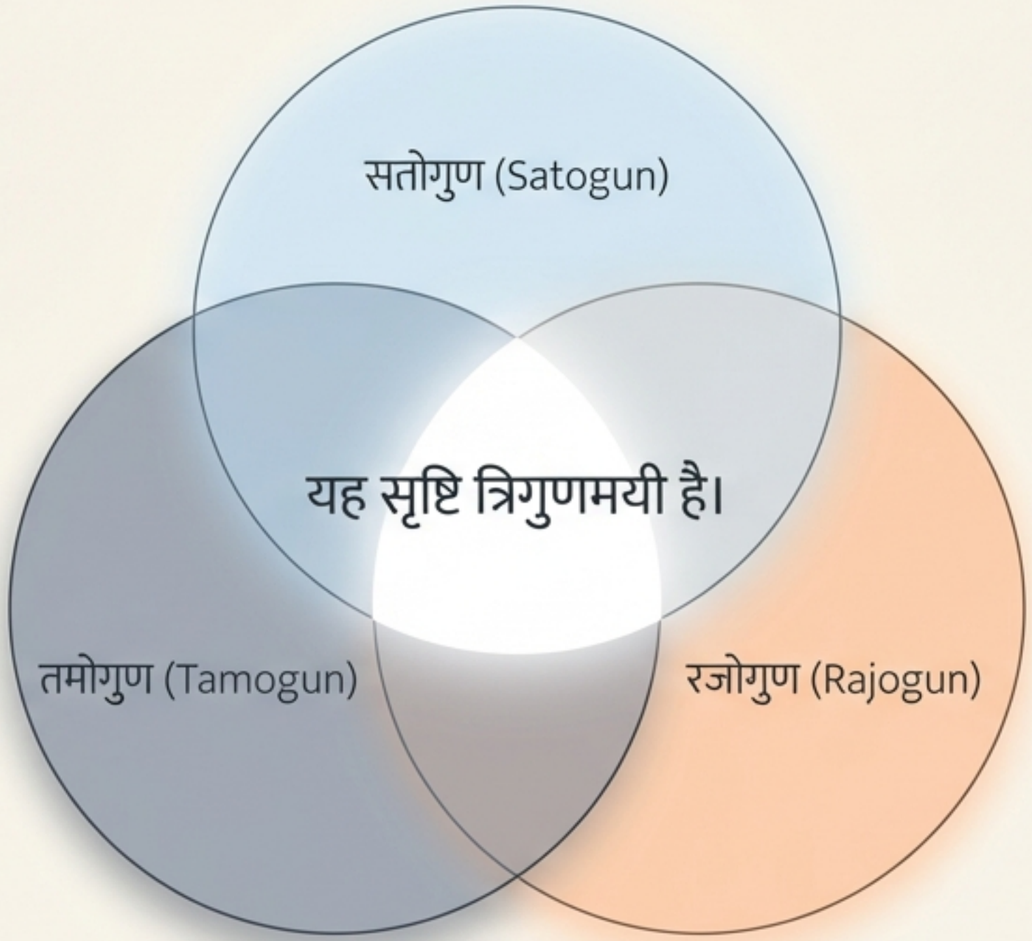

NotebookLM

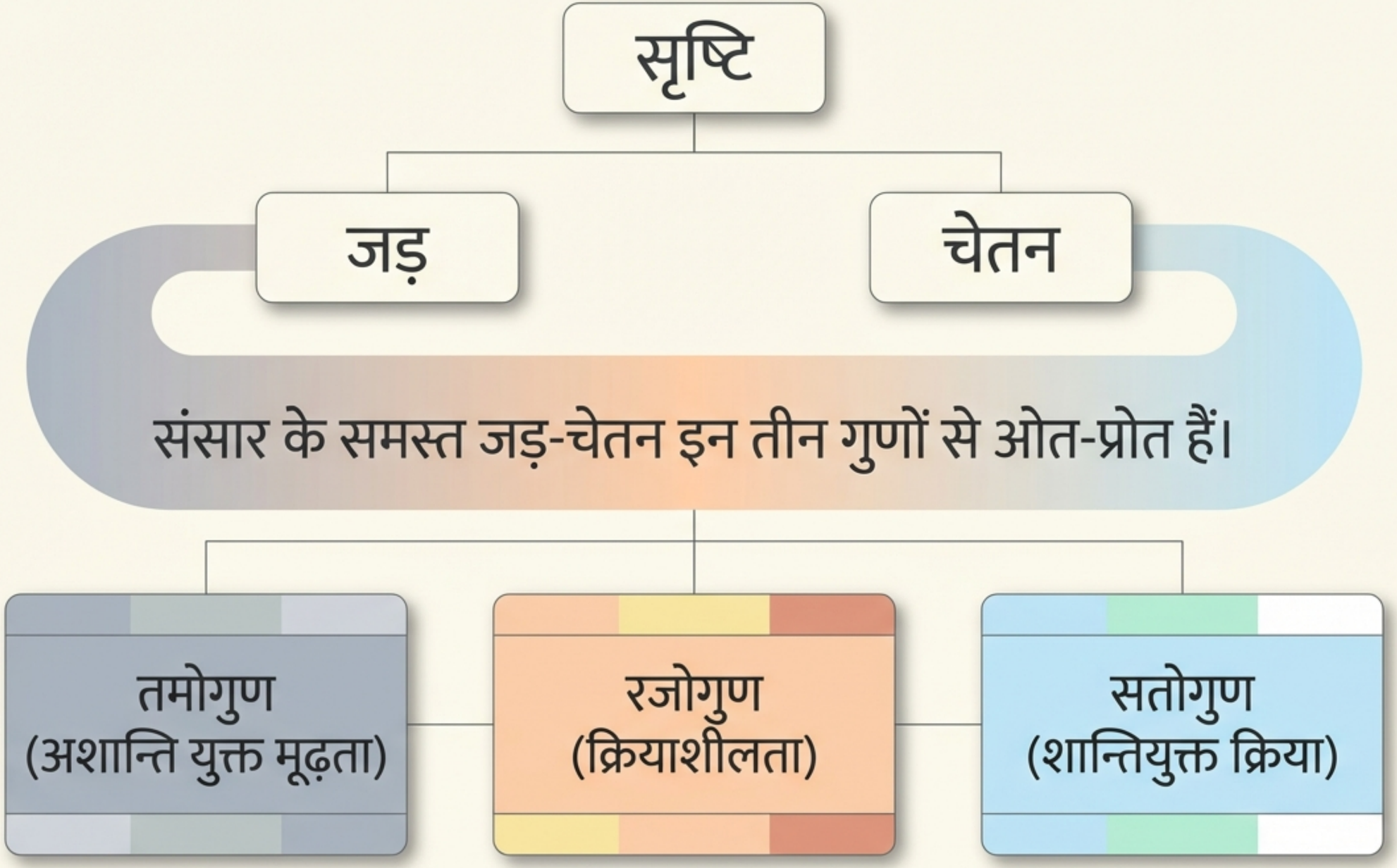
सृष्टि
जड़
चेतन
संसार के समस्त जड़-चेतन इन तीन गुणों से ओत-प्रोत हैं।
तमोगुण
(अशान्ति युक्त मूढ़ता)
रजोगुण
(क्रियाशीलता)
सतोगुण
(शान्तियुक्त क्रिया)

NotebookLM

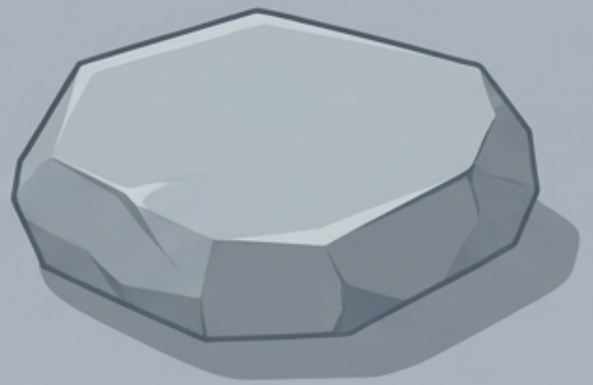

तमोगुण

ऊर्जा का अभाव। लकवाग्रस्त अवस्था के समान, जहाँ प्राण-शक्ति और शौर्य का नितान्त अभाव होता है।



रजोगुण

अनियंत्रित ऊर्जा। इन्द्रियों की प्रबलता, चंचलता और विलासिता का निरन्तर प्रवाह।



सतोगुण

सामंजस्यपूर्ण ऊर्जा। पवित्रता, अनासक्त व्यवहार और अन्तरात्मा की असाधारण शान्ति।

NotebookLM

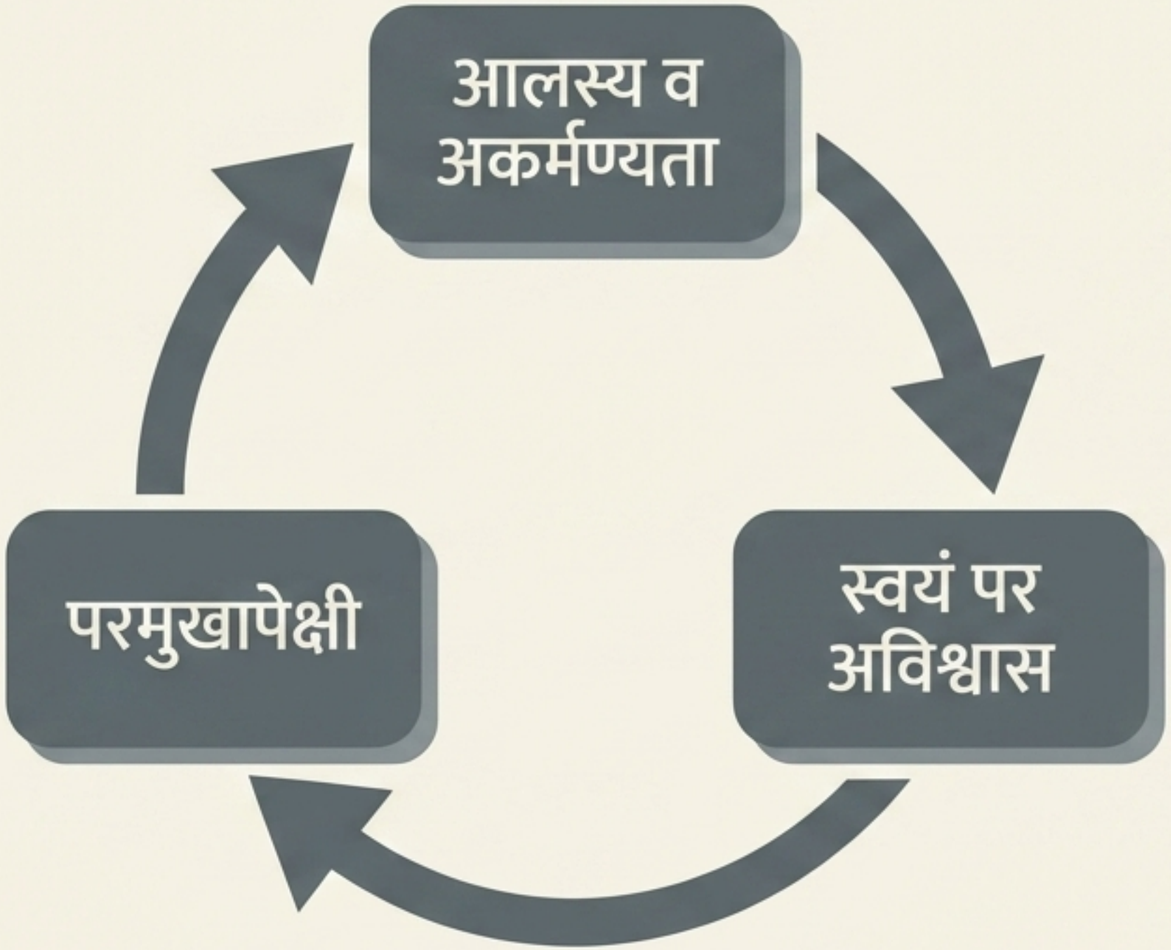

तमोगुणी मनोभूमि

व्यक्ति की शक्तियाँ कुण्ठित हो जाती हैं। विचार, आहार, कार्य और उद्देश्य—सभी मलीन होते हैं। शरीर में स्थूल बल हो सकता है, परंतु आत्मबल का नितान्त अभाव रहता है।

NotebookLM

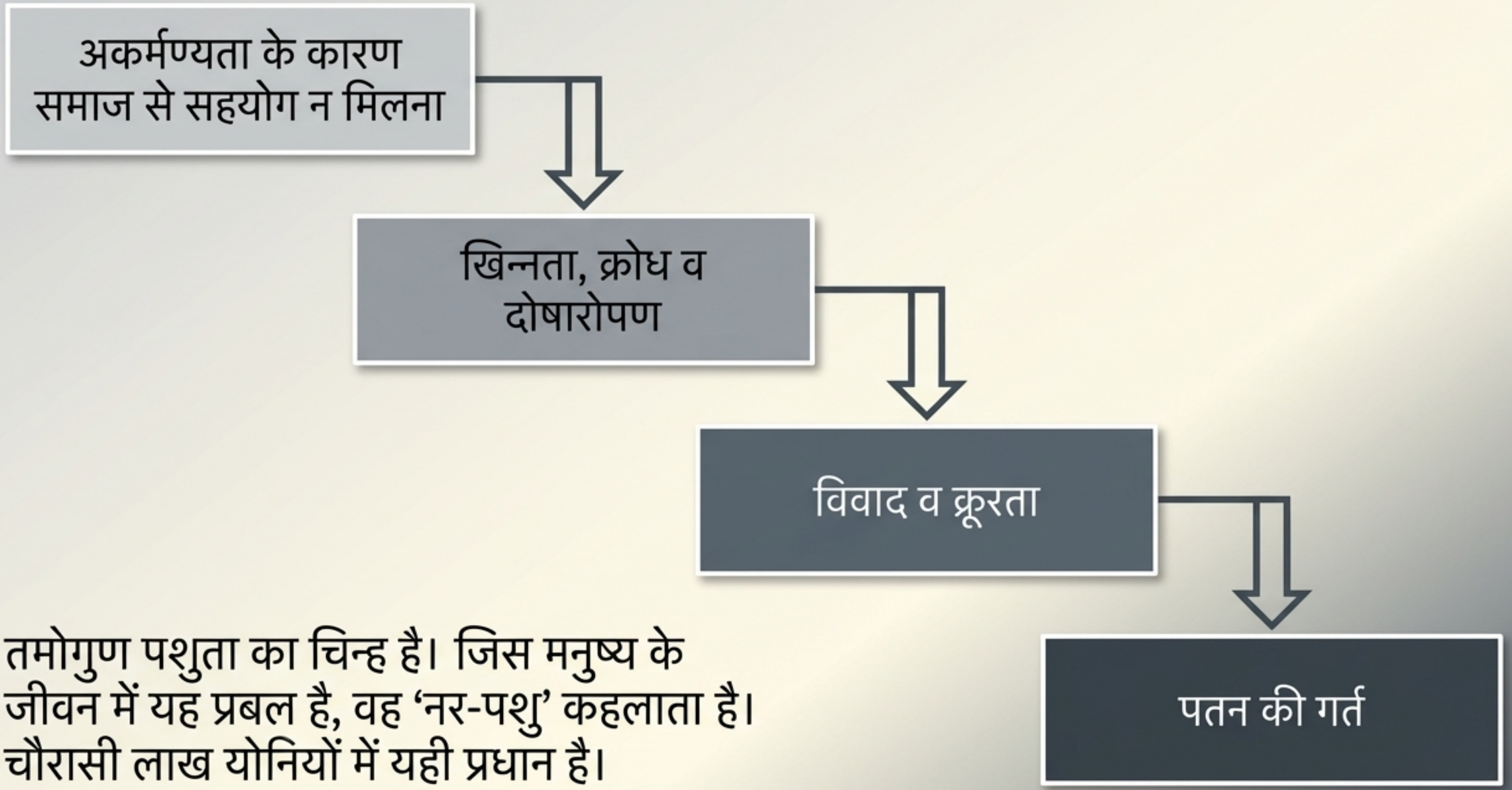

तमोगुण पशुता का चिन्ह है। जिस मनुष्य के जीवन में यह प्रबल है, वह 'नर-पशु' कहलाता है। चौरासी लाख योनियों में यही प्रधान है।

NotebookLM


क्रियाशीलता - तम की
अपेक्षा कार्यों में राजसिकता
जब जीव की प्रगति होती है,
तब उसका रजोगुण बढ़ता है।
यह जड़ता को तोड़ने वाली
ऊर्जा है।
प्रगति की
इच्छा
नर-पशु अवस्था - जड़ता

NotebookLM

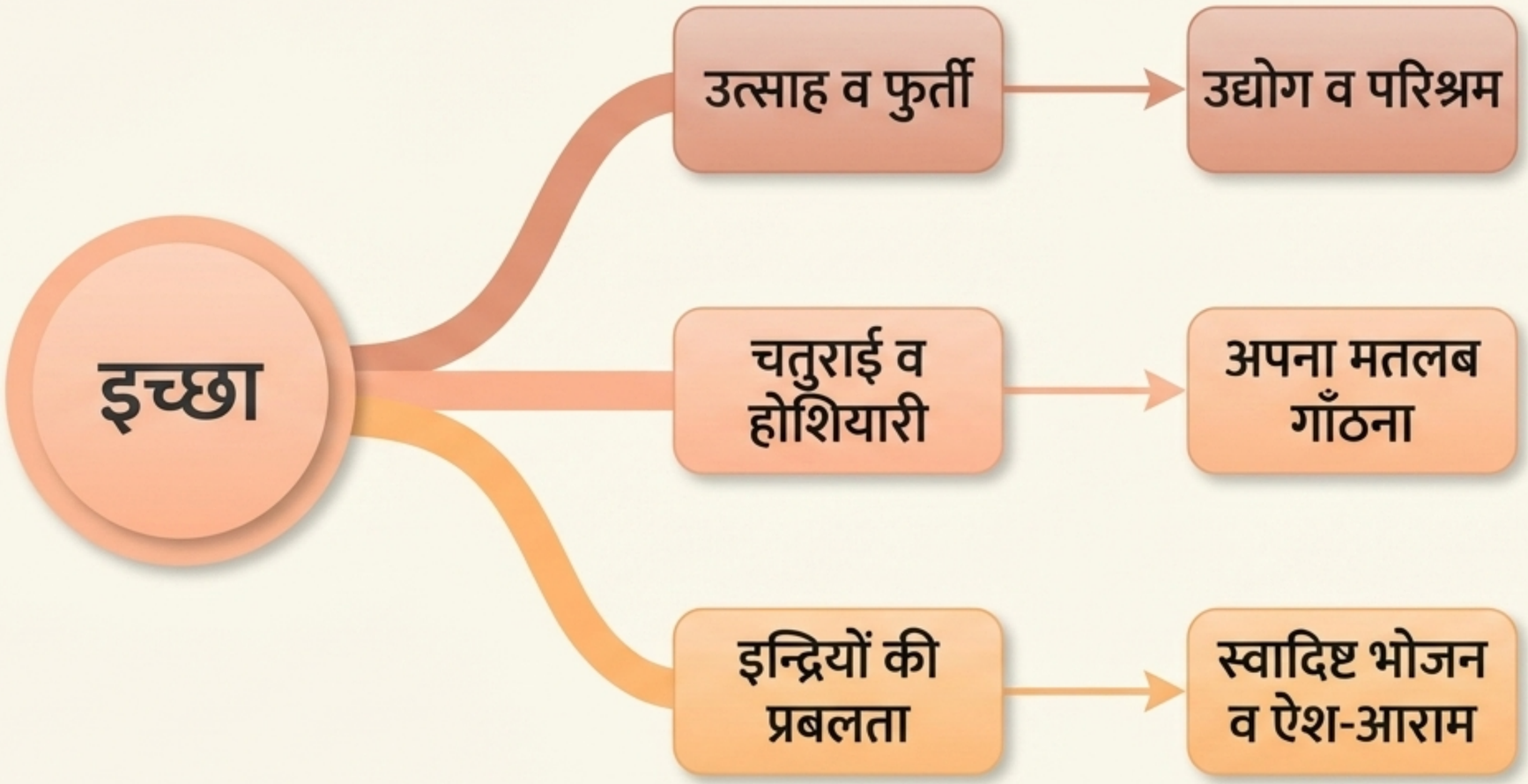

ऐसे लोग बहिर्मुखी होते हैं। वे यारबाशी, शान-शौकत, और बड़प्पन में खूब मन लगाते हैं।

NotebookLM



सुन्दरम्

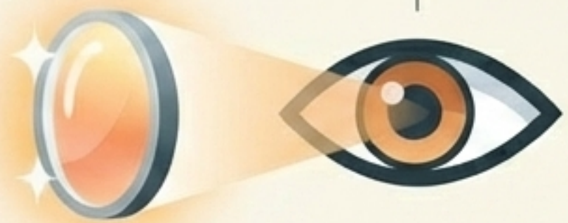

भौतिक आकर्षण → इस पर लट्टू हो जाते हैं

सत्य और शिव

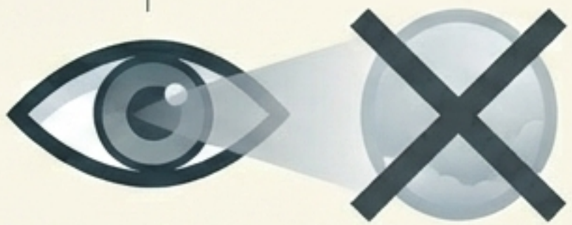

आन्तरिक दुर्बलता → अपनी बहुमूल्य शक्तियों को छिछोरी बातों में बर्बाद करते हैं।

NotebookLM

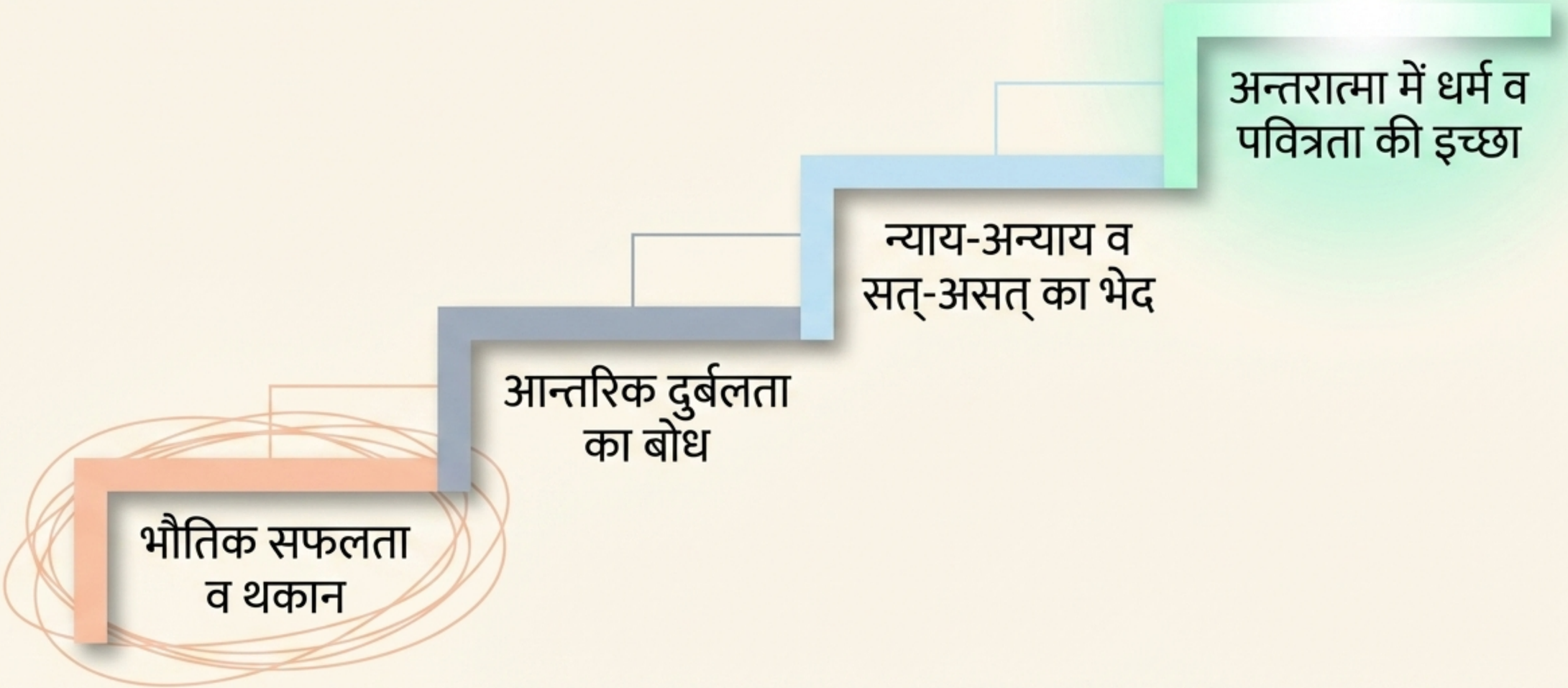

कुच-कांचन (तुच्छ धन) की तुच्छता को समझकर मनुष्य तप, साधना और प्रभु शरणागति की ओर अग्रसर होता है।

NotebookLM

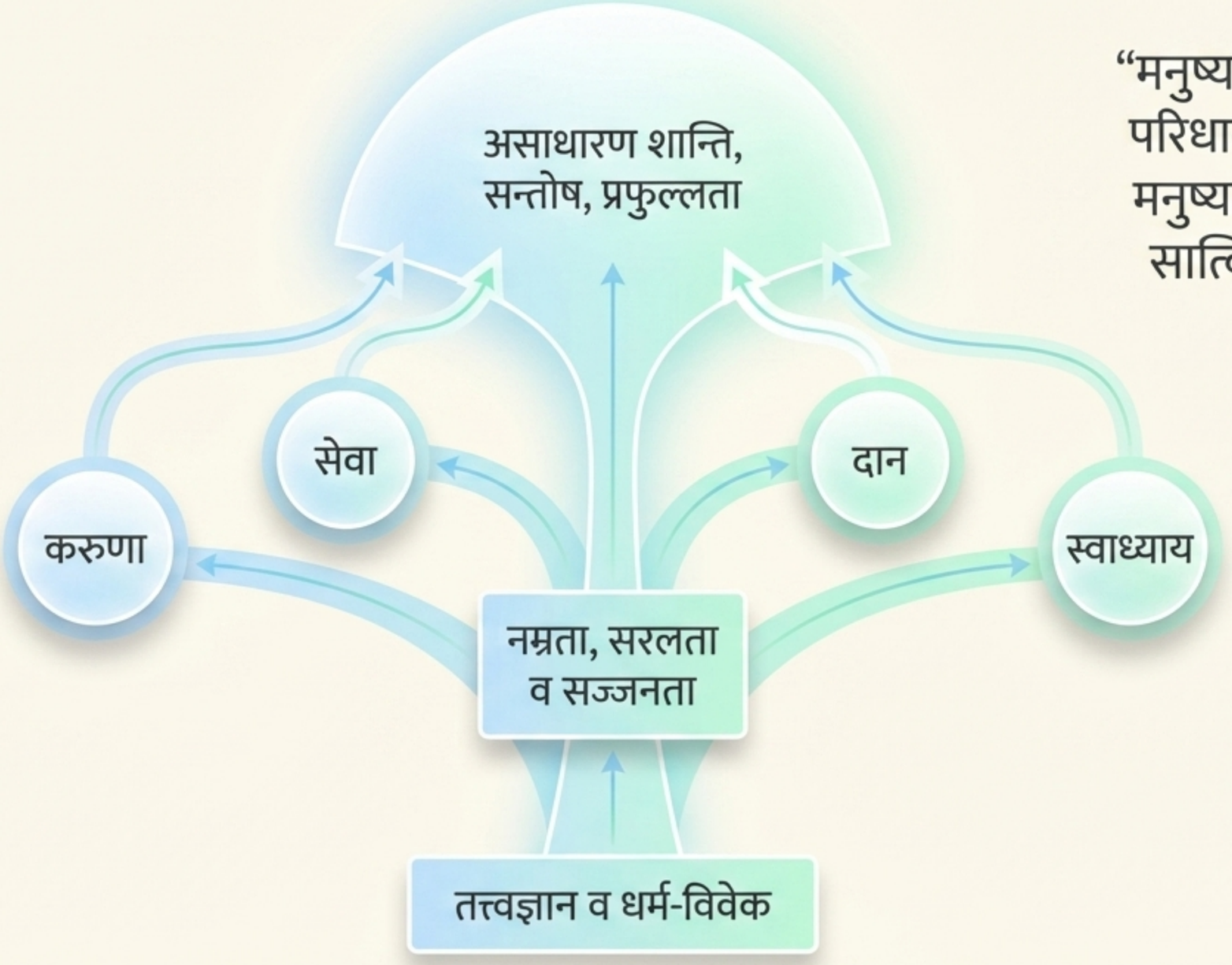

“मनुष्य का वास्तविक परिधान सतोगुण है। मनुष्यता का निवास सात्विकता में है।”

NotebookLM


वातावरण की शान्ति
श्रेष्ठ आचरण
व्यक्तिगत पवित्रता
दैनिक रहन-सहन, खान-पान में शुद्धता।
मन, वचन और कर्म में अशुचि
भावनाओं का प्रवेश न होना।
दूसरों के लिए हितकारी विचार
और भलाई के काम।
चारों ओर का वातावरण पवित्र रहता है।
निकटवर्ती लोगों को अज्ञात रूप से प्रेरणा
मिलती है।

NotebookLM

	तमोगुण	रजोगुण	सतोगुण
मूल स्वभाव	अशान्ति युक्त मूढ़ता	चंचलता व क्रियाशीलता	शान्तियुक्त क्रिया व पवित्रता
कार्य शैली	अकर्मण्य व परमुखापेक्षी	खुदगर्ज व परिश्रमी	अनासक्त, दयालु व सेवाभावी
मानसिक स्थिति	निराश व क्रोधी	बहिर्मुखी व व विलासी	असाधारण शान्ति व सन्तोष
अंतिम परिणाम	तीव्र गति से पतन	भोग और लोभ का कुचक्र	परमात्मा की समीपता

NotebookLM

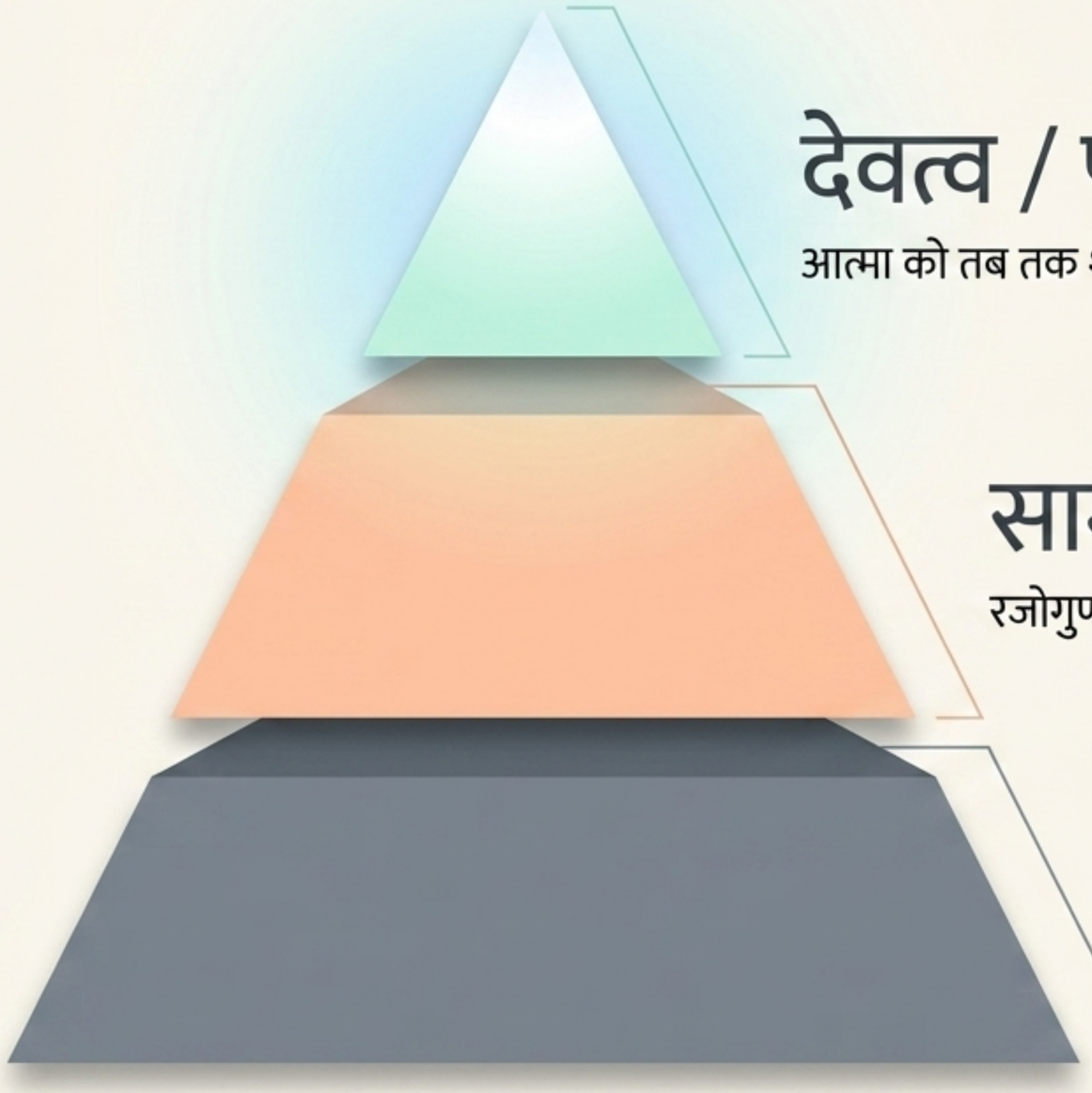

देवत्व / पूर्ण मनुष्यता

आत्मा को तब तक शान्ति नहीं मिलती जब तक कि उसे सात्विकता प्राप्त न हो।

सामान्य मनुष्यता से नीचे

रजोगुण तमोगुण से ऊँचा है, पर मनुष्यता से नीचा है।

पशुता

तमोगुण सबसे निकृष्ट अवस्था है।

NotebookLM

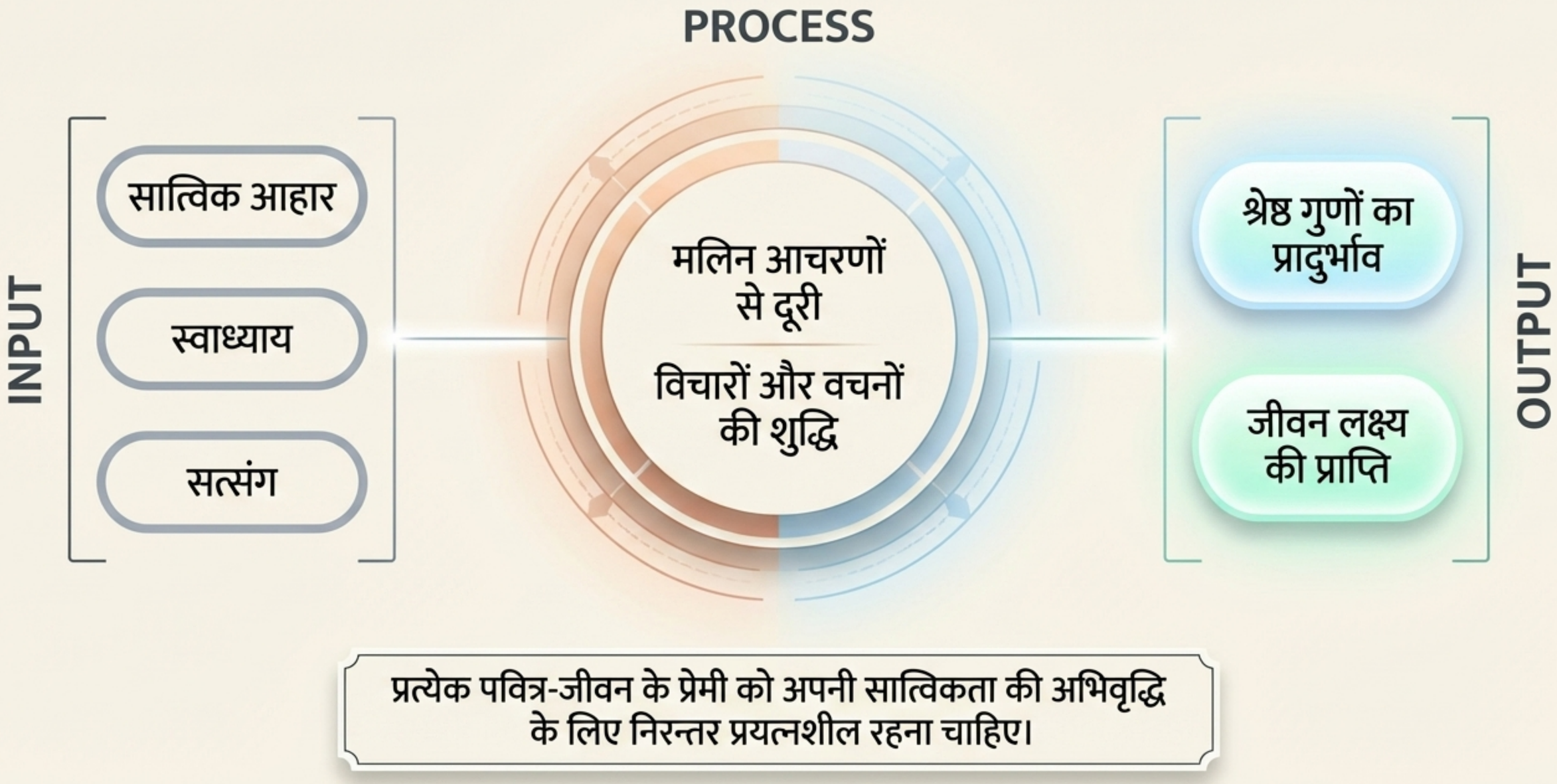

प्रत्येक पवित्र-जीवन के प्रेमी को अपनी सात्विकता की अभिवृद्धि के लिए निरन्तर प्रयत्नशील रहना चाहिए।

NotebookLM

जो मनुष्य जितना सतोगुणी है,
वह परमात्मा के उतना ही समीप है।

इस दैवी तत्त्व को प्राप्त करके
जीव धन्य होता है।

— "पवित्र जीवन" पुस्तक से
लेखक: पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

NotebookLM